को वहां चोट खानी पड़ी, ब्रिटिश सेना की उस व्यक्ति के बारे में क्या रिपोर्ट थी ? कोरिया में जब वह व्यक्ति गया, तो भारतीय सेना-धिकारियों ने उस व्यक्ति के सम्बन्ध में क्या रिपोर्ट दी और क्या यह सत्य नहीं है कि जब वह व्यक्ति कोर कमांडर बना कर वहां पर रखा गया, तो अपनी दुर्बलता और भय के कारण वह सेना के हैडक्वार्टर को तेजपुर से हटा कर गौहाटी ले आया और उसने यूनी-वर्सिटी के होस्टल को इसलिए खाली करा दिया कि सेना का हैडक्वार्टर वहां रखा जायेगा, लेकिन जब ईस्टर्न कमाण्ड को यह सारी बात पता चली, तो उनके अनुरोध पर—मुझे यह पता लगा है—दोबारा हैड-क्वार्टर को तेजपुर भेजा गया ?

मैं संरक्षण मन्त्री को यह कहना चाहता हूं कि अनुभव का दुनिया में आज तक कोई विकल्प नहीं हुआ है । अनुभव की बड़े से बड़े शक्तिशाली देश भी बहुत सम्हाल करते हैं । नेफा में हुई हमारी पराजयों में एक बहुत बड़ा कारण यह है कि हमने अनुभवी अधिकारियों को अपने हाथों से खो दिया था । इसीलिये सुना तो यहां तक गया है कि १४ नवम्बर को, जब प्रधान मन्त्री का जन्म दिन था, उन महाशय ने बधाई का तार दिया और अपने तार में यह भी लिखा कि मैं आपको यह भी सूचना देना चाहता हूं कि बामडीला को कोई खतरा नहीं है । और फिर तीन दिन बाद उसी बाम-डीला का पतन भी हो गया । प्रधान मन्त्री को रेडियो पर घोषणा करनी पड़ी कि बामडीला का पतन हो गया है ।

लेकिन इस प्रकार के व्यक्ति को क्या सजा सरकार ने दी ? यह कि सेना से हटा कर एक असैनिक जहाज कम्पनी में दस हजार रुपये प्रति मास पर उसको नियुक्त कर दिया । क्या सरकार इस प्रकार सेना में अनुशासन रख सकेगी ?

संरक्षण मन्त्री ने अपने वक्तव्य में सैनिक गुप्तचर विभाग की गतिविधियों पर बहुत बल दिया है । अपने सारे वक्तव्य में उन्होंने किसी बात पर अधिक बल दिया है, तो मिलीटरी इन्टेलिजेंस पर, संरक्षण मन्त्री के वक्तव्य में इस विषय के अतिरिक्त किसी एक विषय पर पांच पैराग्राफ्स नहीं हैं । मैं समझता हूं कि युद्ध-काल में गुप्तचर विभाग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है । दूसरे महायुद्ध में यही गुप्तचर विभाग था, जिस ने जर्मनी से इंग्लैण्ड पर आने वाली विपत्ति के मुंह को रूस की ओर मोड़ दिया था । अगर कहीं हमारा गुप्तचर विभाग पूर्ण सतर्क होता, तो जिस प्रकार से पिछले आठ दस सालों से चीन के गुप्तचर विभाग ने. . .

**उपाध्यक्ष महोदय** : क्या माननीय सदस्य और समय लेना चाहते है ?

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : जी, हां ।

**उपाध्यक्ष महोदय** : तो कल माननीय सदस्य अपना भाषण जारी रखें ।

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : धन्यवाद ।

---

**17 hrs.**

## LANGUAGE USED ON AIR*

**श्री यशपाल सिंह** (कैराना) : उपाध्यक्ष महोदय, ६ सितम्बर को आल इंडिया रेडियो की जो मौजूदा पालिसी है उसके मुताल्लिक जो सवाल आया था मैं उसके बारे में कुछ कहने के लिये खड़ा हुआ हूं ।

सरकार ने ६ सितम्बर को जो जवाब दिया था वही जवाब उसने २४ अप्रैल को दिया था । भाई भक्त दर्शन जी ने जो सवाल चार महीने पहले पूछा था उसके जवाब में सरकार ने कहा था कि इसके लिये कोई तारीख नहीं बतलाई जा सकती न कोई डेडलाइन कायम की जा सकती है । वही सवाल मैंने ६ सितम्बर को पूछा तो सरकार ने यह कहा कि हम अमल कर रहे हैं लेकिन कोई डेडलाइन सरकार तय नहीं कर सकती । चार महीने के बाद सरकार वहीं की वहीं है । हम लोग यह ख्याल करते थे कि सरकार वहां से बहुत आगे बढ़ेगी लेकिन चार महीने बाद

*Half-an-hour Discussion.

[श्री यशपाल सिंह]

भी सरकार वहीं की वहीं है । सरकार को इसके लिये ठोस कदम उठाने पड़ेंगे ।

आल इंडिया रेडियो के ऊपर सारे देश का दारोमदार है । अगर प्रचार की पालिसी गल रहेगी तो सारे देश को पतन की तरफ जाना पड़ेगा । क्या मैं जान सकता हूं कि आज इमर्जेन्सी के वक्त सरकार इस जनता को युद्ध के लिये तैयार करने के लिये क्या कर रही है? जिस आल इंडिया रेडियो पर दो दफे यह कहा जाता है, सवेरे और शाम, कि हम कभी भी यद्धप्रिय नहीं रहे थे, हम कभी जंग से मुहब्बत करने वाले लोग नहीं थे, क्या यह जनता आज जंग के लिए तैयार हो सकती है ? हर्गिज नहीं हो सकती । कब हम लोग युद्ध के लिये तैयार नहीं थे ? अगर गीता को उठा कर देखा जाये तो गीता का सारांश है :

"सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्ध मीदृशिम्"

अगर भगवान राम के जीवन से युद्धलीला को समाप्त कर दिया जाये तो उन का जीवन शून्य हो जायेगा । अगर आज गुरु गोबिन्द सिंह महाराज से हम लोग प्रेरणा लेते हैं और कोटि कोटि जनता जो उन के नाम से जागृत होती है तो सिर्फ इस लिये कि उन्होंने युद्धकला को दिखलाया और युद्धलीला की । देश को पीछे हटाने के लिये कहा जाता है कि हम लोग कभी युद्धप्रिय नहीं थे, हम ने कभी जंग के साथ प्रेम नहीं किया था । यह गलत है । हमारी धारणा और हमारे यहां का धर्म हमेशा से यह रहा है :

"हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्"

हमारी धारणा और हमारा धर्म रहा है कि अगर जंग करते करते मर जाओगे तो स्वर्ग जाओगे और अगर जंग जीत जाओगे तो राज्य भोगोगे । आज जो हमारी २६ हजार मुरब्बा मील जमीन दुश्मनों के कब्जे में है उस के लिये ठोस प्रचार की जरूरत है, लेकिन आज भी आल इंडिया रेडियो के ऊपर आशिकाना गाने गाये जाते हैं, अश्लील हास्य होता है, अश्लील गाने होते हैं । इस पालिसी को बदलना पड़ेगा । लैंग्वेज पालिसी के मुताल्लिक मैं साफ कह दूं कि अगर भारत की भाषा आज स्थिर नहीं हुई तो भारत को आजादी भी स्थिर नहीं रह जायेगी ।

मातृ भाषा का सवाल मातृ भूमि के साथ जुड़ा हुआ है । मुझे याद है आयरलैंड में ८० साल के बूढ़े डीवेलरा ने कहा था कि अगर हमारे आयरलैंड की आजादी को तराजू के एक पलड़े में रक्खा जाये और आयरलैंड की मातृ भाषा को दूसरे पलड़े में रक्खा जाये तो मैं मातृ भाषा की ओर झुकूंगा, क्योंकि अगर हमारी मातृ भाषा रहेगी तो हमारे मुल्क की आजादी मेरे पैर चूमेगी और अगर मातृ भाषा नहीं रही तो हमारी आजादी छिन जायेगी । आल इंडिया रेडियो से जितनी देर गाने होते हैं, मैं पूछता हूं कि क्या हम यह उम्मीद नहीं करते कि जंग की तैयारियां हों ? इमर्जेन्सी के मतलब बतलाये जायें, देश के बच्चे को तैयार किया जाये, उस के ऊपर खूब पट्टी बांधने से ले कर राइफल की घांय घांय तक की ट्रेनिंग दी जाये, आज जरूरत इस बात की है, लेकिन वह ट्रेनिंग नहीं दी जाती । मुझे कहते हुए शर्म आती है कि आज ही सवेरे मैं ने देखा कि कितने संगीत ऐसे थे जिन का युद्ध के साथ ताल्लुक था, कितने संगीत ऐसे थे जिन का मातृ भूमि के साथ ताल्लुक था । एक तरफ मैं देखता हूं कि नौजवान के लिये समय है तैरने का, घुड़सवारी करने का, राइफल चलाने का, बाडी बिल्डिंग करने का; दूसरी तरफ रेडियो गाना सुनाता है :

"धड़ी धड़ी मेरा दिल धड़के"

भला जिन का दिल धड़कता है उन को हार्ट ट्रबल नहीं होगी, उन पर हार्ट अटैक नहीं होगा ? दिल धड़कने वाले नौजवान गिरेंगे

तो क्या होगा ? आज जरूरत इस बात की है कि इस पालिसी की ओवरहालिंग की जाय, इस पालिसी को बदला जाय । यह हमारे प्रचार का साधन है । आज जिस तरह से रूस ने अपने रेडियो से दुनिया को और अपनी जनता को ट्रैक्टर की ट्रेनिंग दी, राइफल की ट्रेनिंग दी, युद्ध की ट्रेनिंग दी, अन्नोत्पादन की ट्रेनिंग दी, उसी प्रकार से हमारे माननीय मंत्री जी भी कर सकते हैं । जितना समय हमारे माननीय मंत्री जी को मुझे समझाने में लगता है, डांटने में लगता है उतना समय वे आल इंडिया रेडियो के सुधार में लगायें तो इस देश का बच्चा बच्चा पत्थर की तरह से लोहे की तरह से लौहपुरुष बन सकता है, लेकिन इस के लिये आप को काम करना पड़ेगा ।

मैं आप को आज की बात बतलाऊं । सुबह मेरे पास एक ठाकुर साहब आ गये, बहुत बड़े, बहुत तगड़े । मेरे पिता के साथी थे, मैं उन की गोदी खेला हुआ था, मैं उन का पाला हुआ था । सवरे आ कर मुझ से नाराज होने लगे । मैं ने कहा आप नाराज क्यों होते हैं ? आप मुझे बतलाइये, अगर मैं आप की आज्ञा से न चलू तो आप नाराज हों । मैं ने उन से पूछा कि आखिर क्या बात है और वे क्यों मुझ से नाराज हो रहे हैं । ठाकुर साहब ने कहा कि बात पर तो दुनिया नाराज हो जाय, लेकिन ठाकुर तो वह है जो बगैर बात के ही नाराज हो जाय । मैं मंत्री महोदय से दरख्वास्त करूगा कि जितना समय वह हमें डांटने में लगाते हैं उतना समय व आल इंडिया रेडियो की पालिसी को बदलने में लगायें तो यह देश लोहे का देश बन जायेगा ? यह गुरु गोविन्द सिंह की भूमि है—महाराणा प्रताप की भूमि है, यहां भूषण की जरूरत है, यहां कविवर तुलसीदास की जरूरत है, बाल्मीकि की जरूरत है । यहां पर कोई गीता के कृष्ण का पुजारी पैदा हो इस बात की जरूरत है ।

मैं आप से पूछता हूं कि इतनी रिकमेन्डशन्स की गईं थीं इन में से कितनी रिकमेन्डेशन्स ऐसी हैं जिन के ऊपर आप ने अमल किया ? श्री प्रकाश जी खुद कहते हैं कि मैं तो ७५ वर्ष का बूढ़ा हो गया हूं, ७५ साल की उम्र में मेरी एनर्जी थक गई है, लेकिन हमारी सरकार कहती है कि नहीं, आल इंडिया रेडियो के लिये जो सिफारिशें हुई हैं उन को इम्प्लिमेंट करने के लिये श्री श्रीप्रकाश आयेंगे । वह कहते हैं कि मैं इनवैलिड हूं, वह कहते हैं कि मैं जर्जर हो गया हूं, मैं वृद्धावस्था में हूं, और सरकार यह कहती है मानो न मानो, तुम्हें यह काम करना पड़ेगा । जरूरत इस बात की है कि इस पालिसी को बदला जाय । अगर आप कहें कि देश इस के बगैर उन्नति कर सकेगा तो मैं कहना चाहता हूं कि वह हर्गिज इस काम में उन्नति नहीं कर सकता । आल इंडिया रेडियो के महकमे के लिये सब से बड़ी जरूरत इस बात की है । अगर इस रेडियो पालिसी को आप नहीं बदलते तो अंग्रेजी के जो भी शब्द हमारी जबान में आते हैं वे हमारी भाषा को भ्रष्ट करने के लिये आते हैं । अंग्रेजी जहां भी गई, उस मुल्क की आजादी को खत्म करने के लिये गई । जो जबान बोसीदा हो चुकी है, जिस जबान को कान पकड़ कर इजराईल निकालता है, जिसे कान पकड़ कर दूसरे मुल्क निकालते हैं वह अंग्रजी जबान हमारी इस भाषा पर लादी जा रही है । आप से मेरा निवेदन यह है कि आज से आल इंडिया रेडियो की पालिसी को बदला जाय ।

अगर मैं भूलता नहीं हूं तो पिछले महीने की २९ तारीख थी, या उस से एक दो दिन पहले बाद में हो सकती है, मैं बैठा हुआ शाम को रेडियो सुन रहा था । वहां से को प्रवचनकर्ता बोल रहे थे । मुझे शर्म आई उस को सुन कर । मैं ने दस मिनट तक उन ई भाषण को सुना, मालूम होता था जैसे कोके दर्जा चार का लड़का पढ़ रहा हो । शायद उन को चश्मे से दिखलाई न देता हो, इसलिये नाक से लगा कर पढ़ रहे थे, अटक अटक कर के । हमारी भाषा का इस प्रकार से इतना

[श्री यशपाल सिंह]

पतन हो चुका है कि जो लोग आते हैं वे सिफारिशों के बेटे हैं, जो लोग आते हैं बोलने के लिये वे सिफारिश ले कर आते हैं। अधिकारी लोग नहीं आते। आज ऐसी भाषा की जरूरत है जो भूषण ने दी थी, जो गीताकार भगवान कृष्ण ने दी थी। आप इस काम को कर सकते हैं। आप भगवान राम के वंश से हैं, उन के वंशज हैं। भगवान राम की यह तारीफ थी कि :

"रामोद्विर्वनंविभाषते"

राम जो कुछ कह लेते हैं उस से पीछे नहीं हटते हैं। आप ने यह वादा किया है कि आप आये हैं तो आप हिन्दी की सेवा करेंगे, आप ने वादा किया है कि आप राष्ट्र का निर्माण करेंगे। मैं पूछता हूं कि क्या यही भाषा राष्ट्र का निर्माण करेगी जिस का आप उपयोग करते हैं ? मैं आप से साफ कहता हूं कि आज अय्याशी के गाने या शृंगार रस के गाने देश को ऊपर नहीं उठा सकते। महाकवि के अनुसार मुझे याद आता है कि आज वह समय है कि :

"बिभुक्षितैः व्याकरणं न भुज्यते
पिपासतैः काव्य रसो न पीयते।"

आज जरूरत इस बात की है कि देश के अन्दर एक ठोस आवाज पैदा की जाय, देश के अन्दर मारने और मिटने की भावना पैदा की जाय। जब नेगोशियेशन्स की बात कही जाती है, जब परसुएशन की बात कही जाती है, जब मैं आल इंडिया रेडियो खोल कर बैठता हूं और लेक्चर सुनता हूं नेगोशिएशन, परसुएशन और एसोसिएशन के, तो मैं एक दम समझ लेता हूं कि देश की खुद्दारी को बेचा जा रहा है, देश के आत्मसम्मान के साथ धोखा किया जा रहा है। देश अगर उठेगा तो नैगोशिएशन से नहीं उठेगा, देश अगर उठेगा तो परसुएशन से नहीं उठेगा, देश अगर उठेगा तो एसोसिएशन से नहीं उठेगा। देश **टिट फार टैट** मांगता है, देश **ब्लड फार ब्लड** मांगता है, देश **इन्जरी फार इन्जरी** मांगता है। देश अपमान का बदला लेना चाहता है, देश हर्गिज इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता। आज अगर कोई कहते हैं कि बातों से मसला हल करेंगे तो वे बातों से मसला हल नहीं करना चाहते, वे देश के अभिमान को बेचना चाहते हैं। मुझे याद है कि अपने जमाने के सब से बड़े आदमी प्रिंस बिसमार्क ने लिखा था :

"Not by parliamentary speeches or majority votes are the mighty questions of State solved but through a policy of blood and iron."

एक तरफ देश की २६ हजार मुरब्बा मील जमीन दुश्मन के कब्जे में है, एक तरफ हमारे नौजवानों को, महाराणा प्रताप और गुरु गोविन्द सिंह की औलादों को, निहत्था करके मरवाया जाता है, और दूसरी तरफ एयाशी के गाने सुनाये जा रहे हैं। इस पालिसी को बिल्कुल बदलना होगा अगर आप को देश को उसका आत्मसम्मान वापस दिलाना है। मैं आप को बतलाऊं कि मेरे भतीजे विक्रम सिंह को चीनियों ने कुल्हाड़ों से तीन टुकड़ों में काटा और उसका खून पिया। हमारे दिल से पूछिये जिन के लाल गये हैं कि क्या हम को आल इंडिया रेडियो से ये शृंगार रस के गाने अच्छे, लगते हैं। ये एयाशी के गाने अच्छे लगते हैं, ये अश्लील गाने अच्छे लगते हैं ? हरगिज अच्छे नहीं लगते, आज आप को केवल वीरता के गाने प्रसारित करने चाहिऐं।

**Dr. Sarojini Mahishi** (Dharwar North): Sir, on a point of order. Is the half-an-hour discussion on the language of AIR or with reference to the contents of the programmes?

**श्री यशपाल सिंह** : माननीया महोदया, अभी तो दस मिनट हुए हैं, अभी बीस मिनट और बाकी हैं।

मैं बड़े अदब से अपने मिनिस्टर साहब से निवेदन करूं। हूं कि जो आज शृंगार रस के गाने सुनाये जाते हैं उन को बन्द करायें। जिन लोगों को ऐसे गाने सुनने हों, उन के लिए बहुत ज्यादा घर खुले हैं, वे वहां जा कर उन को सुन सकते हैं। हमें तो आज देश के गिरते हुए चरित्र को उठाना है, देश की गिरती हुई भावनाओं को उठाने के लिए आज वीरता के गानों की जरूरत है, आज देश के आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए, देश के उत्थान के लिए वीरता की जरूरत है, आज एयाशियाने गानों की जरूरत नहीं है।

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है, मजा तो जब है कि गिरतों को उठाये साकी।

आज जरूरत इस बात की है कि जो देश का अपमान हुआ है, जो देश की पराजय हुई है उस पराजय के कलंक को धोया जाये। आज देश की ४४ करोड़ जनता में आत्मसम्मान की भावना भरनी चाहिए और जनता को बताना चाहिए कि जहां धर्म करने वाले पहुंचते हैं, जहां इबादत करने वाले पहुंचते हैं, जहां बन्दगी करने वाले पहुंचते हैं उसी स्वर्ग में धर्म युद्ध में मरने वाल वीर भी पहुंचते हैं।

तो मेरा निवेदन है कि आज आल इंडिया रेडियो की भाषा नीति में सुधार की नहीं बल्कि आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है, उसकी नीति को अलिफ से लेकर ये तक बदलना पड़गा।

प्रातःकाल के समय उठने का समय होता है, सायंकाल को सोने का समय होता है। अगर आप को देश की रक्षा करनी है तो देश की भावना को बदलना पड़ेगा। मैं आप से पूछता हूं कि आप मुझे कोई भी ऐसा देश बतायें जहां कि राष्ट्र गीत सोते हुओं को सुनाया जाता हो। लेकिन हमारे आल इंडिया रेडियो से "जन मन गण" सोते वक्त गाया जाता है। संसार में राष्ट्र गीत सोतों को जगाने के लिए सुनाया जाता है, लेकिन इस अभागे देश में राष्ट्र गीत गाया जाता है लोगों को सुलाने के लिए, यह गीत उस समय बजाया जाता है जब सोने का समय होता है। मेरा कहना है कि राष्ट्र गीत के समय को बदला जाये।

**उपाध्यक्ष महोदय** : अब आप खत्म करें।

**श्री यज्ञपाल सिंह** : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आप के द्वारा माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि वह एक सच्चे क्षत्रिय की तरह से, एक सच्चे योद्धा की तरह से, एक सच्चे नेता की तरह से मैदान में आवें और आल इंडिया रेडियो की भाषा नीति को बदलें, और ऐसी व्यवस्था करें कि आल इंडिया रेडियो से देश भक्ति के और वीरता उपदेश दिये जायें और शुद्ध मातृभाषा का उपयोग किया जाये और अंग्रेजी भाषा के गन्दे शब्द ले कर हमारी भाषा को नापाक न किया जाये।

**Mr. Deputy-Speaker:** Shri D. C. Sharma. Only those persons who have given previous notice will be permitted to ask questions. Shri Sharma has given notice. So, he can ask a question.

**Shri D. C. Sharma** (Gurdaspur): I will ask one question. What is the average time per day given by the All India Radio so far as the emergency situation is concerned? What was the time given when the emergency began and what is the time given now?

**Shri Bhakt Darshan** *rose*—

**Mr. Deputy-Speaker:** No further questions. It is not permissible. The rules are very strict.

**सूचना और प्रसारण मंत्रालय के इंचार्ज मंत्री (श्री सत्यनारायण सिंह)** : उपाध्यक्ष महोदय, मैं ने माननीय सदस्य का भाषण, जिन के नाम से यह विवाद रखा गया था, बड़े गौर से सुना। उन्होंने जो कुछ कहा वह

[ श्री सत्यनारायण सिंह ]

तो श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के भाषण से मिलता जुलता था, रेडियो से तो शायद उसका सम्बन्ध कम ही रहा । ये बातें तो माननीय सदस्य नेफा रिपोर्ट पर बोलते समय कह सकते थे । उन के मोशन से तो मैं यह समझा था कि रेडियो पर जो हिन्दी इस्तैमाल की जाती है उस के बारे में कुछ कहेंगे । जो बातें उन्होंने कहीं उन से लगता है कि वह या तो रेडियो को ठीक से सुनते नहीं या केवल रात को ही सुनते हैं, या एसे वक्त ही सुनते हैं जिस वक्त कि शृगार रस के गाने ही आते हों ।

पहले क्या होता था यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन आजकल सुबह राष्ट्र गान होता है । जबय इमरजेंसी शुरू हुई ह तब से कोई दस ग्यारह महीने से एक कमेटी की राय से रेडियो का प्रोग्राम रखा जाता है और उस कमेटी में दोनों सदनों के सभी दलों के सदस्य शामिल हैं । उस कमेटी में कम्युनिस्ट भाई भी हैं और अन्य दलों के सदस्य भी हैं । और उन की सब की यह राय है कि इमरजेंसी के बाद से जो इन दस महीनों में रेडियो का प्रोग्राम आता है वह बहुत अच्छा है । मैं भी कभी कभी रेड़ियो सुनता हूं । जैसे ही शहनाई गजना बन्द होता है राष्ट्रीय गगीत गाया जाता है । जो सुनते होंग उन को इस का पता होगा । किसी दिन एसा नहीं होता कि प्रार्थना के शुरू होने से पहल या जो अंग्रेजी बुलेटिन पांच मिनट का होता है, उसके पहले राष्ट्र गीत न बजाया जाता हो । उसके बाद प्रार्थना होती है । उस में हमने कभी कोई अश्लील गाना नहीं सुना । आध घंट या ४० मिनट तक यह कार्यक्रम होता है ।

जो जय भारती प्रोग्राम होता है उस को आप देखें । उस में वेद से, पुराण से, और अन्य ग्रन्थों से वीर गाथाएं दी जाती हैं । आज ही मैं सुन रहा था उस में अर्जुन का और श्री कृष्ण का सम्वाद आ रहा था जिस में अर्जुन से कहा जाता है :

युद्धस्व कृत निश्चयः

अर्जुन से कहा जाता है कि तू क्यों डरता है । युद्ध कर । वेद से वीरता की कथाएं आती हैं । मुझे पता नहीं था कि वेद में भी ऐसी चीजें हैं । इस प्रोग्राम में वेदों की ऋचाएं सुनायी जाती हैं । उस में एक बात मैं ने सुनी जो कि आज के युग में भी कितनी लागू होती है । उस में सुनाया गया कि पीले रंग के लोगों से बहुत होशियार रहना चाहिए । मुझे यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि आज से चार पांच हजार वर्ष पहले भी लोगों की यह धारणा थी । मैं चाहता हूं कि वहां से ला कर वह ऋचा आप लोगों को सुनाऊं । उस में दिया गया है कि ऐसे दुश्मन की जीभ काट देनी जाहिए । उस के कान काट देने चाहिए ।

**श्री यशपाल सिंह :** भाई भाई नहीं करना चाहिए ।

**श्री सत्यनारायण सिंह :** तो मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि वेदों से इस प्रकार की ऋचाएं उस प्रोग्राम में सुनायी जाती हैं, शास्त्रों से, तुलसीदास की रामायण से वीरता के प्रसंग उस में सुनाये जाते हैं । मैं समझता हूं कि यह कहना अनुचित है कि आल इंडिया रेडियो से सिर्फ शृंगार रस के गाने ही प्रसारित किये जाते हैं ।

और फिर जीवन में और चीजें भी हैं । माननीय सदस्य क्या जीवन को बिल्कुल शुष्क बना देना चाहते हैं । अगर सिर्फ लड़ाई की ही बाते चलती रहे तो लोग कहेंगे कि यह मौजूं नहीं है । फिर अभी तो लड़ाई नहीं है । लड़ाई के लिये हमारी तैयारी हो रही है । अगर हम रात दिन मारशल सांग सुनाते रहें तो लोगों पर उस का क्या असर पड़ेगा ।

शायद माननीय सदस्य को यह पसन्द हो या उन जैसे दो चार प्रतिशत लोगों को पसन्द हो । लेकिन उन को छोड़ कर और लोग कहेंगे कि यह क्या हो रहा है कि सिर्फ मारशल सांग ही चल रहे हैं । हर वक्त मारशल सांग लोगों को अच्छे नहीं लग सकते । थोड़े वक्त दूसरे गाने भी इसलिये बजाए जाते हैं । और फिर माननीय सदस्य जीवन को इतना खुश्क क्यों बनाना चाहते हैं, वह शृंगार रस से इतना नाराज क्यों हैं ।

मेरी समझ में नहीं आता कि माननीय सदस्य को शृंगार रस से इतनी नाराजी क्यों है ? मनुष्य जीवन में उस का भी एक बड़ा जबरदस्त हिस्सा है । अश्लील शृंगार अलबत्ता खराब है लेकिन अच्छा शृंगार रस तो आदमी को और ऊंचा उठाता है ।

अब जहां तक भाषा का सवाल है, उस को ले कर श्री श्रीप्रकाश के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है मैं उसे उचित नहीं समझता हूं । अब उम्र का कोई सवाल नहीं है । कुछ लोग ३२ साल की उम्र में ही कमजोर और बूढ़े हो जाते हैं । आप स्वयं अपने नेता को ही देख लीजिये । उन के लिये मेरे दिल में बड़ी इज्जत है । मेरा मतलब श्री राजगोपालाचार्य से है जो कि ८५ वर्ष के हैं लेकिन इस उम्र में भी उन में कितनी इनर्जी विद्यमान है यह आप और हम सब खूब जानते हैं । आज वह ८५ साल की उम्र में भी हिन्दुस्तान में तहलका मचाये हुए हैं तो हमारे श्री श्रीप्रकाश तो ७५ साल के ही हैं । वह काफी तगड़े हैं और खूब काम करते हैं । इसलिये उम्र की बात इस में लाना फिजूल है । जो कमेटी बनी उस कमेटी की एक वर्ष में चार मीटिंग्स हुई । चारों मीटिंग्स उन्हों ने एटेंड कीं । उन के जो सुझाव आये थे, उन में जो सिफारिशें की गई उन पर काफी तौर पर अमल किया गया है । अब एक आध एडमिनिस्ट्रेशन की बात को जाने दीजिये लेकिन उन को छोड़ कर बाकी सिफारिशों पर काफी तौर पर अमल किया गया है । थोड़ी बहुत चीजों को छोड़ कर वह काम हुआ ।

आप को मालूम होगा कि पिछले साल अगस्त महीने में १९६२ के बाद रेडियो की हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में विवाद शुरू हो गया था । अब कैसे हुआ और वह क्यों हुआ मैं उस में नहीं जाना चाहता हूं । लेकिन यह सही बात है कि हमारे संसद् के सदस्यों की काफी तादाद में और संसद् के बाहर भी हिन्दुस्तान में इस चीज की बड़े जोर से चर्चा चली कि यकायक जो इस रेडियो की भाषा की हिन्दी की, उस में खास तौर पर उर्दू के शब्द आ गाये हैं । रेडियो की भाषा हिन्दी नहीं बल्कि उर्दू हो गई है । मेरे कान में भी यह बात आई और प्राइम मिनिस्टर साहब ने भी मझ से कहा इसलिये मैं ने उस वक्त के जो इनफारमेशन एंड ब्राडकास्टिंग के मंत्री थे, श्रीगोपाला रेड्डी, उन को मैं ने इस बारे में एक कमेटी बिठाने का सुझाव दिया और उसी वक्त उन्हों ने एक कमेटी बनाई । उस कमेटी के वह चेअरमैन हुए और कमेटी के सदस्य हुए मामा वरेड़कर, सेठ गोबिन्द दास, श्री महाबीर त्यागी, श्री गंगा शरण सिंह, डा० गोपाल सिंह, श्री राम धारी सिंह दिनकर, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री नवल प्रभाकर, श्री ललित सेन, श्री एम०पी० सत्यनारायणा और प्रोफेसर एच० एन० मुखर्जी । इसी से आप समझ सकते हैं कि कैसे लोगों की कमेटी बनी थी ? उस कमेटी ने सिफारिश की और वह कमेटी गने जिसके कि अध्यक्ष श्री श्रीप्रकाश जी हैं । इस कमेटी की जो कुछ सिफारिशें आई हैं वे सब कबूल हो गयी हैं । याद रखिये जो कुछ उन्हों ने बताया उन्हों ने यह बताया कि रेडियो की हिन्दी भाषा शुद्ध तो होनी चाहिये लेकिन साथ ही साथ सरल भी होनी चाहिये । एक बात हम को हमेशा याद रखनी है कि एक स्पौकेन वर्ड होता है और एक रिटेन वर्ड होता है । जब हम रेडियो से प्रसार करते हैं तो रेडियो खाली माननीय सदस्य जैसे विद्वान लोगों के लिये ही नहीं है बल्कि वह उन लाखों और करोड़ों आम आदमियों के लिये हैं जो कि पान की दुकान को घेर कर, चौपाल में बठ कर गांवों में रेडियो सुनते हैं । उन में बहुत बड़ी तादाद अनपढ़

[श्री सत्यनारायण सिंह]

लोगों की है । अब ऐसे लोग जो कि दस्तखत कर सकते हैं उन की गिनती मरदमशुमारी में लिखे पढ़े लोगों में की जाती है । हालांकि वह पढ़े लिखे खाक होते हैं, वह चिट्ठी पत्री नहीं लिख सकते हैं, अखबार नहीं पढ़ सकते हैं लेकिन चूंकि वह अपना नाम लिख पाते हैं इसलिये पढ़े लिखे लोगों में ऐसे लोगों का भी नाम लिख लिया जाता है । अब जरा ध्यान दीजिये कि जब ऐसी हालत हो तो अगर बहुत विलष्ट हिन्दी और साहित्यक हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा तो उन के पल्ले क्या पड़ेगा ? मैं तो रेडियो की भाषा आम लोगों की समझ में आने वाली है या नहीं इस की जांच मैं अपने नौकर से कर लेता हूं । मैं उससे पूछता हूं कि भाई तेरी कुछ समझ में आता है या नहीं । अब अगर ऐसे लोग रेडियो की भाषा नहीं समझ सकते तो फिर देश की बहुत बड़ी आबादी उससे लाभ न उठा सकेगी ।

यह ठीक है कि रेडियो में कुछ साहित्यक चर्चा भी होनी चाहिये । मैं मानता हूं कि इस तरह का अगर कोई आप प्रोग्राम चलाते हैं जैसे मालविकाग्निमित्र, किरातार्जुनीय और भारवि अर्थ गौरव की चर्चा करते हैं तो उस की भाषा कठिन होगी, उस की भाषा साहित्यक होगी । लेकिन रेडियो के जो न्यूज बुलेटिस होते हैं, स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखने वाली वार्त्तायें निकलती हैं और कृषि से सम्बन्ध रखने वाली नो वार्त्तायें निकलती हैं या जानवरों की किस तरीके से हिफाजत करनी चाहिये इस सम्बन्ध में जो वार्त्तायें निकलती हैं, उनकी भाषा सरल होनी चाहिये । अगर उन की भाषा कठिन होगी, साहित्यक अथवा लिटरेरी होगी तो उस का कोई फायदा नहीं होने वाला है । क्योंकि जिन को आप इस बारे में बतलाना चाहते हैं वह ९५ फीसदी आदमी इसको नहीं समझ पायेंगे । इसलिये यह देखना होगा कि ऐसी चीजें जिन को कि आप आम लोगों तक और गांव गांव में पहुंचाना चाहते हैं और उनके लिये प्रचार बुलेटिस निकालते हैं तो उन बुलेटिनों की भाषा सरल होनी चाहिये और वह ऐसी होनी चाहिये कि जिसको कि सब लोग समझ सकें ।

मैं इस बात को मानता हूं कि अहिन्दी लोग संस्कृतमय हिन्दी को जल्दी समझ लेते हैं । शुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिन्दी उन को जल्दी समझ में आ जाती है क्योंकि देश की सभी प्रादेशिक भाषायें, एक खाली तामिल को छोड़ कर सभी भाषाओं की एक प्रकार से जननी संस्कृत है, और उन की भाषाओं में संस्कृत शब्द काफी मात्रा में होते हैं इसलिये बंगाला, आसामी और तेलुगु वाले उस हिन्दी को बहुत अच्छी तरह समझ पाते हैं जिस में कि संस्कृत के शब्द होते हैं । मैं उस को मानता हूं । उस के लिये जो प्रोग्राम हमारे होते हैं जैसा मैं ने बतलाया लिटरेरी प्रोग्राम्स होते हैं उन की भाषा उस तरह की होनी चाहिये, मैं इसे मानता हूं । लेकिन आम जनता के लिये जो आम बुलेटिन समाचार आदि के होते हैं उन की भाषा सरल होनी आवश्यक है । इसलिये मैं तो समझता हूं कि जो कुछ कम व बेशी उस कमेटी की कार्य-वाही हुई है उस में कोई खास शिकायत भी बात मुझे नजर नहीं आती है ।

अब जहां तक हिन्दी में अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं के पापुलर शब्दों को न ले कर हिन्दी में ही उनके लिये शब्द रखने का आग्रह है मैं समझता हूं कि इस के लिये जिद करना उचित न होगा । आप किसी भी भाषा को देख लीजिये । आज अंग्रेजी भाषा दुनिया में सबसे ऊंची भाषा मानी जाती है । उस का प्रचार आज संसार में फ्रेन्च भाषा से भी ज्यादा हो गया है हालांकि पहले फ्रेंच भाषा सब से ज्यादा बोली जाती थी और समझी जाती थी । अब अंग्रेजी भाषा को देखिये । उस भाषा में क्या है । उस के साहित्य में हिन्दी के हजारों शब्द भरे पड़े हुए हैं । जिस तरह से स्वास्थ्य आदमी को पचाने की शक्ति होती है उसी तरह से एक बलवती भाषा की यह निशानी है ।

कि उस में दूसरी भाषाओं के शब्दों को पचाने की शक्ति होती है, उन को ले कर वह अपने में एबजौर्ब कर लेती है, ऐसिमिलेट कर लेती है और उन को अपने अन्दर रख लेती है । इसलिये अंग्रेजी या दूसरी भाषाओं के जो शब्द आ गये हैं और उनको हम अपने व्यवहार में रख सके हैं तो खामख्वाह ऐसे अंग्रेजी शब्दों की हिन्दी के लिये जिद करना उचित नहीं है । अब अगर इस पर जिद करी जाय तो कोशिश कर के नये नये शब्द उन के लिये गढ़े जायेंगे और हो सकता है कि वे शब्द ऐसे गढ़े जायें जो कि अनपढ़ लोगों का तो कहना ही क्या है पढ़े लिखे लोगों की समझ में भी न आयें ।

पोस्टकार्ड, रेल, स्टेशन और चैक आदि शब्द जो कि काफी प्रसिद्ध हो गये हैं और हर कोई उनको बखूबी समझ लेता है अगर हिन्दी अनुवाद निकालने का आग्रह किया गया तो इस तरह के क्लिष्ट और अनपापुलर शब्द गढ़े जायेंगे कि आम लोगों का तो कहना ही क्या पढ़े लिखे लोगों को भी उनको समझने में कठिनाई होगी ।

जहां तक न्यूज बुलेटिन्स का सवाल है मैं तो नहीं कह सकता कि उस से सभी लोग संतुष्ट होंगे लेकिन आम तौर पर उस की भाषा जैसी होने चाहिए वैसी होती है । मैं जह तो दावा नहीं करता कि उसमें कूछ भी सुधार गुंजाइश नहीं है लेकिन निश्चित रूप से हम प्रगति की तरफ जा रहे हैं । दोनों कमेटियां फिर जो उसके सदस्य लोग हैं, उन्हों हैं जो कुछ भी राय मशविरा दिया है, उस के अनुसार हम काम कर रहे हैं और मेरा विश्वास है कि जो भी थोड़ी बहुत कमी बाकी रहती है उस को भी हम सदस्यों के परामर्श से उस अधूरे काम को पूरा कर लेंगे ।

इमरजेंसी के बारे में प्रचार के लिय जो उन्हों ने पूछा तो मैं यकायक उस का जवाब नहीं दे सकता हूं कि कितना समय उस में दिया जाता है लेकिन जहां तक मैं समझता हूं जैसा कि मैं ने उस के सम्बन्ध में बतलाया था दस महीने पहले हाल में जो रेडियो का प्रोग्राम बना है उस के लिये भी समय दिया जाता है । माननीय सदस्य के पास उस के लिये कोई सुझाव हो तो वे मेरे पास भेज दें । जो कुछ भी संभव होगा मैं हमेशा करने के लिये तैयार रहूंगा । आप जानते ही हैं कि मेरा आप लोगों से कैसा सम्बन्ध रहा है । आप लोगों के सहयोग से ही हम सब कुछ काम करते हैं । जब तक यह डिपार्टमेंट मेरे हाथ में है, मुझे आशा है कि आप का सहयोग मुझे सदा की तरह मिलता रहेगा और जो भी आप का सुझाव होगा उस पर बराबर अमल करने की कोशिश की जायेगी ।

**श्री यशपाल सिंह** : यह नेशनल ऐंथम प्रातःकाल को होना चाहिये संध्या को नहीं होना चाहिये ।

**उपाध्यक्ष महोदय** : आर्डर, आर्डर ।

**17.29 hrs.**

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Friday, September 20, 1963/Bhadra 29, 1885 (Saka).*